

आइए इस लेख में जानें, अंग्रेज़ अधिकारियों ने मध्यकालीन भारत का वर्णन कैसे किया है। मध्यकालीन से अर्थ है 10वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक। प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को स्वयं भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

[https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4VDIBVUFGWjhISjQ/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4VDIBVUFGWjhISjQ/edit?usp=sharing)

**"I have traveled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such calibre, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage, and, therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self-esteem, their native self-culture and they will become what we want them, a truly dominated nation.."**

- T. B McCaulay (2nd Feb 1835)

“भारत केवल कृषि में ही नहीं बल्कि औद्योगिक और व्यापारिक दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ देश है। भारत की भूमि इतनी उपजाऊ है और यहाँ के व्यापारी इतने समझदार हैं, जितने दुनिया के किसी भी देश में नहीं। यहाँ के कारीगर इतने कुशल हैं कि उनकी बनाई हुई चीज़ें पूरी दुनिया के बाज़ार में बिकती हैं और इसके बदले में दुनिया के अन्य बाज़ार इन वस्तुओं के दाम के रूप में सोना देते हैं। जब ये वस्तुएँ दुनिया के बाज़ार में बिकती हैं तो सोना - चांदी ऐसे भारत में गिरता है जैसे नदियाँ महासागर में गिरती हों। सोना यहाँ आता तो है पर बाहर जाता नहीं है।”

- William Digby (17th Century)

“भारत देश में मेरी मति के अनुसार ३६ ऐसे उद्योग चलते हैं जिनसे निर्मित वस्तुएँ पूरी दुनिया में निर्यात होती हैं। भारत के शिल्प उद्योग सबसे उत्कृष्ट, कलापूर्ण और कीमत में सबसे सस्ते हैं। सोना, चांदी, लोहा, इस्पात, ताम्बा, लकड़ी और दुर्लभ वस्तुओं से इतनी विविधता के साथ वस्तुएँ बनती हैं जिनके वर्णन का अंत नहीं हो सकता। मुझे जो प्रमाण मिले हैं उनसे यह पता लगता है कि भारत का निर्यात दुनिया के बाज़ारों में पिछले 3000 हजार सालों से अबाधित रूप से चल रहा है।”

- Fransva Pirad, 1711

“इंग्लैंड के लोग जब पशुओं जैसा जीवन व्यतीत करते थे, उस समय भारत का बना कपड़ा विदेशों में निर्यात होता था। मुझे ये कहते हुए तनिक भी हिचकिचाहट नहीं है कि सारी दुनिया ने कपड़ा बनाना और पहनना भारत से सीखा है! रोमन साम्राज्य में जितने भी राजघराने हुए हैं, वे आरम्भ काल से ही भारत में निर्मित कपड़े मँगाते और पहनते रहे हैं।”

- Martin

“भारत में बना कपड़ा इतना सुन्दर और इतना हल्का है कि हाथ पर रखो तो पता ही नहीं चलता। भारत में कालीकट, सूरत, ढाका, मालवा में इतना महीन कपड़ा बनता है कि पहनने वाले का पूरा शरीर दिखाई देता है। इतना उत्तम कपड़ा दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं बनता!”

- Taverny, 1750

“भारत का कपड़ा इतना महीन होता है कि अगर उसे घास पर बिछा दिया जाए तो आप ये नहीं बता सकते कि उस पर ओस की बूँदें हैं या नहीं (कपड़ों का इतना हल्का रंग होता था)। भारत का 15 गज का लंबा थान 100 ग्राम से भी हल्का होता है जो एक अंगूठी के बीच में से निकाल सकता है। 15-20 रत्ती के वजन के कपड़े भी मैंने भारत में देखे हैं। हमने तो कपड़े बनाना 1780 के बाद सीखा है। भारत में कपड़ों का निर्माण पिछले 3000 सालों से होता आ रहा है।”

- William Ward

“भारत से मैं एक shawl लेकर आया हूँ जिसे मैं 7 सालों से पहन रहा हूँ। इसे मैंने कई दफे धोया है पर इसमें आज तक कोई सिलवट नहीं पड़ी। इसकी गुणवत्ता ज्यों की त्यों बरकरार है। मैंने लगभग पूरे यूरोप में प्रवास किया है और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि एक भी यूरोपीय देश इस गुणवत्ता का कपड़ा नहीं बना सकता। भारत ने अपने कपड़ा उद्योग से पूरी दुनिया का दिल जीत लिया है। भारत का कपड़ा अतुलित और अनुपमेय मापदंड का है।”

- Thomas Munroe, 1813

“पूरी दुनिया में जितना उत्पादन होता है, उसका 43% उत्पादन अकेले भारत में होता है। अकेले भारत का उत्पादन दुनिया में सर्वाधिक है। सारी दुनिया की कुल आमदनी का 27% हिस्सा अकेले भारत का है। अमरीका का कुल निर्यात 1% से कम, ब्रिटेन का निर्यात 0.5% से कम तथा पूरे यूरोप और अमरीका के कुल निर्यात की भागीदारी 3-4% से भी कम है। वहीं पूरी दुनिया के निर्यात में भारत की भागीदारी 33% है।”

- ब्रिटिश संसद की बहस; 1840

“यूरोप में अच्छे से अच्छा स्टील, भारत के घटिया से घटिया स्टील का भी मुकाबला नहीं कर सकता!”

- Campbell, 1842

“भारत का इस्पात (Steel) दुनिया का सबसे बेहतरीन इस्पात है। यूरोप का सर्वश्रेष्ठ इस्पात जो कि Sweden में बनता है, भी भारत के इस्पात का मुकाबला नहीं कर सकता। यूरोप ने लोहा बनाना 1825 के बाद में सीखा परन्तु भारत में 10वीं शताब्दी से ही हजारों टन लोहा बनता आया है। भारत के कारीगर इस्पात बनाने के लिए जिस भट्टी का इस्तेमाल करते हैं वो दुनिया का कोई देश नहीं बना पाता। 1764 में मैं भारत से इस्पात का एक नमूना लेकर आया था जिसे मैंने लंदन के सुप्रसिद्ध धातु विशेषज्ञ Dr. Scott को दिया था ताकि वे उसका परीक्षण London Royal Society में करा सकें। परीक्षण के बाद नतीजा यह निकला कि शल्य चिकित्सा के औजारों के लिए इससे बेहतर इस्पात और कोई नहीं हो सकती। इस इस्पात को यदि पानी में भी डालकर रखा जाए तो इसमें जंग नहीं लगेगा।”

- James Franklin, Metallurgist of 18th century

“भारत में बने लोहे और इस्पात का अधिकांश इस्तेमाल जहाज़ बनाने में होता है। भारत के लगभग 2 लाख गाँव समुद्र के किनारे बसते हैं जिनमें जहाज़ बनाने का काम पिछले हजारों सालों से बदस्तूर जारी है। पूरी दुनिया ने जहाज़ बनाने की कला भारत से सीखी है। East India Company के जितने जहाज़ दुनिया में चल रहे हैं वे सारे भारत में बने इस्पात के हैं। ये बात कहते हुए मुझे शर्म आती है कि अभी तक हम इतना बेहतरीन इस्पात नहीं बना पाए हैं। भारत में 50 सालों तक चले जहाज़ को जब हमने इंग्लैंड में चलाया तो वो यहाँ भी 20-25 सालों तक चल गए। जितने मूल्य का हम एक जहाज़ तैयार कर पाते हैं, भारतवासी उतनी ही कीमत में पानी के ऐसे 4 जहाज़ बना लेते हैं।..... भारत में विज्ञान की कई शाखाएं हैं जैसे खगोलशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, बर्फ बनाने का विज्ञान आदि और इनकी

गहराइयों का पता लगाना हमारे बस की बात नहीं। यूरोप के वैज्ञानिकों से 1000 साल पहले भारत के वैज्ञानिकों ने धरती और सूर्य के बीच की दूरी का ठीक ठीक पता लगा लिया था। वारों का क्रम भी यूरोप ने भारत से ही लिया है।“

- Lt. Col. A. Walker, 1842

“भारत के वैज्ञानिक इतने प्रवीण हैं कि सूर्य और चन्द्र ग्रहण की भविष्यवाणी सालों पहले ही कर देते हैं!”

- Daniel Depo, 1708

“मैं भारत की शिक्षा व्यवस्था से अत्यंत प्रभावित हूँ। 80,000 से अधिक गुरुकुल बंगाल प्रान्त में पिछले हजारों सालों से चल रहे हैं।“

- Max Mueller

“भारत में एक भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ एक भी गुरुकुल न हो। भारत में एक भी बच्चा ऐसा नहीं है जो गुरुकुल न गया हो।“

- Ludlo, 19th Century

“उत्तर भारत में 200 व्यक्तियों के ऊपर एक गुरुकुल है। दक्षिण भारत में 400 लोगों के ऊपर एक गुरुकुल चलता है। इंग्लैंड में 1868 तक सामान्य व्यक्तियों के लिए एक भी विद्यालय नहीं था। सम्पूर्ण भारत में साक्षरता की दर 97% है। गुरुकुलों को चलाने के लिए राजाओं से कोई चन्दा नहीं लिया जाता। गुरुकुल की भूमि से जो आय होती है उसी से उसका खर्च चलता है। थोड़ा बहुत जो दान आता है वो स्थानीय लोगों के द्वारा होता है।“

- G.W Litney

“जब भारत में कोई बच्चा 5 वर्ष, 5 मास और 5 दिन का हो जाता है तो उसे गुरुकुल भेज दिया जाता है। उसकी पढ़ाई 14 वर्ष की होती है। भारत में शिक्षा बहुत सुलभ है। एक ही गुरुकुल में राजा और किसान का बेटा दोनों एकसाथ पढ़ते हैं।”

- Pandergraph (नाम में थोड़ी गलती हो सकती है)

“भारत में कृषि उत्पादन सर्वोच्च है। भारत में एक एकड़ जमीन में औसत रूप से 56 quintal धान पैदा होता है। भारत में एक एकड़ जमीन में 120 metric tonne गन्ना पैदा होता है। फसलों की सबसे ज्यादा विविधता भारत में है। भारत में 1,00,000 अलग अलग किस्म के चावल उगाए जाते हैं। कृषि के औज़ार जैसे हथोडा, फावड़ा, बेलची, हल आदि सबसे पहले भारत में ही निर्मित हुए। बीज को एक पंक्ति में बोने की परंपरा सर्वप्रथम भारत में शुरू हुयी।”

- Lester